Chhatrashakti

THE PREMIER STUDENT MAGAZINE

11

छात्रशक्ति

FEBRUARY- 1997

- Symposium on Higher Education
- Huge Student Rally in Cuttack
- नेताजी का राष्ट्रवाद
- प्रा. केलकर युवा पुरस्कार

Crisis of Confidence in Higher Education

Dr. J.L.Azad Addresing the symposium, in the picture from the left Shri Manohar Rao, ABVP National President and Prof. P.V.Krishna Bhat

Bangalore: 22nd Jan. - "Higher education has not adopted to the changing scenario and is unable to inculcate values in students" said J.B.G.Tilak while speaking at the symposium in the National Conference of ABVP in Bangalore. "The main purpose of higher education is to create knowledge for betterment of society. Pure sciences and humanities like philosphy, sociology, art etc. are of seminal importance to social development. If these are ignored to create courses only for job earning, then a grave disservice is being made to society," he further elaborated. "Today pure sciences and academics are taking a back-seat. Vice -Chancellors are more worried about money management and not about excellence in knowledge building."

The problem is further compounded because planners in government have no long term plan nor any clear vision for higher education. Hence there is ad-hoc growth. Universities and colleges are opened without any rationale. Anomalies are therefore growing.

If government is serious about economic reforms, then it had better pay more attention to higher education. In developed countries at least 20% of the eligible population (people in the age group of 17 to 25 years) take higher education. We have a long way to go to reach that stage. But if we are not serious about higher education, it is a sure-fire recipe for disaster. We will be ruled by expatriates, which is happening in many countries.

Earlier during the symposium J.L.Azad stressed the need for adopting higher education to changing values. However it is necessary to remember our roots and the eternal values of our culture. Human values play an important role in higher education.

Azad also said that the so-called large pool of scientific manpower is only an illusion. Many of our science graduates work in clearical positions. Azad cautioned against total privatisation of higher education, as that would introduce hard commercial motives in the noble field of education.

The key note address of the symposium was given by V.Muraleedharan, Ex-general secretary of ABVP. He dwelt on the dilemmas faced by higher education today i.e. merit or social justice, autonomy or accountability, economic reforms and their effect on education, the technological explosion etc. He finally stressed on the need to formulate a clear purpose, philosophy and policy in higher education.

The symposium was chaired by P.V.Krishna Bhat, former President of ABVP. A.S. Sitharamu, noted academician also addressed the delegates during the symposium.

Editorial....

Punch....

Cover Page : Dr.G. Padmanabhan, Director, Indian Institute of Sciences, inauguarating 42nd National Conference of ABVP in Bangalore on 22nd Dec. 1996. To his right Shri Nanu Mallya, Dr. N. R. Shetty and Shri Mahedra Kumar, National Gen. Secretary, ABVP.

Editorial Desk

V. Muraleedharan
Sharadmani Marathe
V. Sangeetha
Prachi Moghe
Shreerang Kulkarni

After a year full of frantic and successful activity we are sure all of you will now be concentrating on your studies . We wish you a fruitful and successful effort.

The scam series which marred the socio-political scenario has settled down. However, inspite of sustained judicial intervention, punishment of those guilty seems nowhere insight. With Bofors papers now being handed over, we hope that the guilty are brought to book post-haste. Only then will the intentions of UF government become clear.

The other test of the government is the approaching budget, where the skills of the Finance Minister will be put to test. Whether he will be able to satisfy all the partners of the UF "bundle" remains to be seen. What is imminent however, is the rise in the prices of fuel, oil and electricity. The lesson to be learnt is limiting the use of energy intensive technology-both at individual and industry level. The root cause of the approaching enery crisis may well be the very nature of technological development, which will have to be tackled at the level of long - term and macro level planning. What will have to change is the perception that material consumption is equivalent to wellbeing.

It was precise this lure of big bucks which attracted the growth of Punjab towards Europe, & led to tragedy on the "Yiohan" in the icy waters of the Indian seas. The murderous actions of the agents facilitating such immigrants must be punished. What is more important is to stem the tide of youth going in search of money, risking humiliating menial jobs, jail and ultimately even death! Several such rackets of illegal immigration thrive and need to provide meaningful employment and create self-respect in today's youth can not be overemphasized. It is hoped that the UF government learns its lesson...

So friends, back again to books and studies. We once again wish you all the very best for the run up to your exams.

देश की वर्तमान स्थिति

अभाविप के 42 वें अधिवेशन में पारित किया गया प्रस्ताव संक्षिप्त रूप में यहाँ पर दे रहे हैं।

भारत अपनी स्वतंत्रता के 50 वर्ष पूरे कर रहा है। इन 50 वर्षों में देश को साधन संपन्न बनाने के लिए बड़ी बड़ी योजनाएँ बनी। गरीबी, निरक्षरता, बेरोजगारी को दूर करने के लिए सत्तासीनों द्वारा नित्य नवीन घोषणाएँ की गई। किन्तु पूरी 8 लुभावनी पंचवर्षीय योजनाओं से गुजरते हुए देश की तस्वीर बिल्कुल विपरीत नजर आती है। समस्याएँ तो दूर हुई नहीं और उनसे घिरे इस देश में जैकसन शो एवं विश्व सुंदरी प्रतियोगिता के आयोजन गरीबी, निरक्षरता, बेरोजगारी का मानो मुंह चिढ़ा रहा हो।

अभाविप का यह राष्ट्रीय अधिवेशन, देश भर में हुए तीव्र विरोध के बावजूद एबीसीएल द्वारा कर्नाटक सरकार के सहाय्य से विश्व सुंदरी प्रतियोगिता एवं महाराष्ट्र सरकार के समर्थन से हिन्दुत्व के तथाकथित संरक्षकों द्वारा कराये गये जैक्सन शो को अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण मानता है। वैश्विकरण के नाम पर पश्चिमी देशों विशेषकर अमरिका द्वारा पूरे तीसरे जगत में न केवल अपना आर्थिक साम्राज्य स्थापित करने का षड्यंत्र चल रहा है अपितु इन देशों के सामाजिक सांस्कृतिक ढांचे को भी तहस नहस करने का प्रयास चल रहा है। विद्यार्थी परिषद का यह राष्ट्रीय अधिवेशन पश्चिमी साम्राज्यवाद के इस दुष्टचक्र का विरोध कर रहे सभी संघटनों से उत्पन्न हुए राष्ट्रव्यापी आंदोलन को एक तर्कसंगत परिणिति पर पहुँचाने का आवाहन करता है।

देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव की भ्रष्टाचार के अनेक मामलों में संलिप्तता ने न केवल विश्व भर में इस पद को कलंकित किया है अपितु जनता की लोकतंत्र के प्रति आस्थापर भी गहरी चोट की है। स्वयं प्रधानमंत्री कर्नाटक में भ्रष्टाचार के अनेक मामलों में संलिप्त है। देवेगौडा सरकार द्वारा नरसिंह राव एवं लालूप्रसाद यादव को किसी तरह बचाने का प्रयास हो रहा है। विद्यार्थी परिषद का यह दृढ मत है कि भ्रष्टाचारियों के समर्थन से चल रही एवं भ्रष्ट मंत्रियों से पटी पड़ी यह सरकार देश की किसी भी आन्तरिक या बाह्य समस्या का समाधान नहीं कर सकती। बांग्ला देश एवं चीन के साथ वार्ता में इन देशों द्वारा भारत के लिये उत्पन्न की जा रही समस्याओं की चर्चा किये बिना गंगा जल देने एवं सीमाओं से सेना हटाने संबंधी समझौते करना सरकार की इस अकर्मण्यता का परिचायक है।

विद्यार्थी परिषद का यह राष्ट्रीय अधिवेशन सार्वजनिक जीवन में शुद्धता लाने एवं भ्रष्टाचार को समूल नष्ट करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी जन अभियान चलाने का आह्वान करता है।

देवेगौडा सरकार जहाँ एक ओर भ्रष्टाचार को संरक्षण दे पल्लवित कर रही है वही दूसरी ओर लोकतंत्र की हत्या करने के नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है। एक दल विशेष को सत्ता में आने से रोकने के लिए अनेक अनैतिक हथकण्डे अपनाएं जा रहे है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा उत्तर प्रदेश में धारा 356 के दुरुपयोग पर दिये गये नवीनतम सर्वसम्मत निर्णय में इस सरकार के अलोकतांत्रिक एवं अनैतिक हथकण्डों का पूरी तरह से पर्दाफाश कर दिया है। वास्तव में भ्रष्टाचार के विरुद्ध एवं संसदीय प्रणाली को बचाए रखने के लिये उठाएं गये विभिन्न कदमों के लिए इस देश की न्याय पालिका साधुवाद की पात्र है।

कॉंग्रेस की आर्थिक नितियों का विरोध करने वाले 13 सत्ताधारी दलों में से सभी आज आँख बंद कर उन्हीं नितियों को जारी रखने का समर्थन करते है, वामपंथिय भी इसमें शामिल है। परिणामत: कमरतोड महंगाई बढ़ती जा रही है, आटा, चावल जैसी चीजों के दामों पर भी सरकार का नियंत्रण नहीं रहा। पूरे आर्थिक उद्योग पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का शिकंजा लगातार बढ़ता जा रहा है और देश का घरेलू उद्योग दम तोड़ रहा है। विश्व व्यापार संघटन की सिंगापूर वार्ता में निवेश संबंधी प्रस्तावों (Multi-Lateral Agreement on Investment) पर अपनी स्वीकृती देकर एवं श्रमसंबंधी प्रस्तावों को मान कर देश की गरीब जनता के साथ घोर विश्वासघात किया है। रक्षा क्षेत्र को छोड़कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर अंकुश समाप्त हो गया है। स्थानीय रोजगार कम हो गये है और WTO के नवीन प्रस्ताव एवं बीमा कंपनियों के निजीकरण के प्रस्ताव, इससे भी कहीं अधिक लोगों को बेरोजगार करेंगे। विद्यार्थी परिषद का यह राष्ट्रीय अधिवेशन पुन: चेतावनी देता है कि पश्चिमी बाजारवाद एवं अमरिका का दबाव खत्म न कर दिया तो हम आर्थिक दिवा लिये पन का शिकार हो जाएंगे।

विद्यार्थी परिषद का अधिवेशन जम्मू कश्मीर में लोकतांत्रिक ढंग से चुनी सरकार का स्वागत करता है और इस बात की चेतावनी देता है कि 1953 के पूर्व की स्थिति बहाल करना राष्ट्र की अखण्डता के लिये गंभीर हो सकता है। उग्रवादी अभी भी घाटी में सक्रिय है। सरकार की जरा सी असावधानी देशघातक हो सकती है। कश्मीरी विस्थापितों को सम्मानपूर्वक घाटी ले जाने के दावे

Contd. on page No.15

"दृढ संकल्प से चुनौतियों का डटकर सामना करो"

श्री. महेंद्रकुमार

नवनिर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री शिमला के श्री. महेंद्रकुमार का राष्ट्रीय अधिवेशन बेंगलूर में *24* दिसंबर *1996* को श्री. राजीव रंजन (पटना) द्वारा लिया गया साक्षात्कार

राष्ट्रीय महामंत्री श्री. महेंद्र कुमार

प्रश्न १ : आपकी शिक्षा कहाँ तक हुई? विद्यार्थी परिषद से कब सम्पर्क हुआ? पूर्णकालिक बनने का विचार क्यों और कैसे आया?

उत्तर : मैंने भौतिकशास्त्र (Physics) में M.Sc. किया। तत्पश्चात् हिमाचल विश्वविद्यालय से मार्केटिंग मैनेजमेंट में पी. जी. डिप्लोमा किया है। मै 1980 में विद्यार्थी परिषद के सम्पर्क में आया जिसकी पूरी प्रेरणा मुझे हिमाचल के तत्कालीन संगठन मंत्री स्वर्गीय सुनील उपाध्यायजी से मिली। विद्यार्थी परिषद में कार्य करते समय यह अनुभव में आया कि अपना जीवन स्वयं के लिए न होकर मातृभूमि के लिए राष्ट्र के लिए होना चाहिए। तब विचार आया कि विद्यार्थी परिषद में कार्य कर मैं राष्ट्र के लिए कुछ कर पाऊँगा। इस विचार की प्रेरणा से मैं पूर्णकालिक बना।

प्र. २ : इस अधिवेशन में शिक्षा से संबंधित विषयों को अधिक उठाया गया, जबकि पूर्व के अधिवेशनों में शिक्षा से अलग विषय अधिक प्रभावी थे। आपका क्या अभिमत है?

उत्तर : हर एक अधिवेशन की एक थीम होती है, जिसके अनुसार कार्यक्रम निर्धारित होते है। इस अधिवेशन की थीम है 'स्वतंत्रता के 50 वर्ष; उपलब्धियाँ एवं चुनौतियाँ,' हम मुख्य रूप से शिक्षा क्षेत्र में कार्य करते है इसलिए स्वतंत्रता के 50 वर्षों के पश्चात शिक्षा क्षेत्र की क्या स्थिति है इसका मूल्यांकन करना आवश्यक था, इसलिए इस विषय को अधिक प्रमुखता एवं प्रभावी ढंग से उठाया गया।

प्रश्न ३ : आज का छात्र दिशाहीन हुआ है इस पर आपका क्या मत है? विद्यार्थी परिषद छात्रों को दिशा देने का प्रयास कैसे कर रही है?

उत्तर : आज का छात्र दिशाहीन नहीं है उसको दिशाहीन करने का प्रयास किया जा रहा है। देश विरोधी शक्तियाँ छात्रों को दिशाहीन कर पाश्चात्त्य संस्कृति की ओर ढकेलने का प्रयास कर रही है। आज तक युवाओं के लिए कोई ठोस राष्ट्रीय नीति नही बन सकी कि युवा शक्ति का उपयोग राष्ट्रहित मे किस प्रकार किया जाए।

विद्यार्थी परिषद ने छात्र शक्ति को संगठित कर राष्ट्र पुनर्निर्माण के कार्य मे लगाया है और छात्र शक्ति को राष्ट्रशक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है।

प्रश्न ४ : विद्यार्थी परिषद के आगामी कार्यक्रम एवं योजनाएँ क्या है?

उत्तर : विद्यार्थी परिषद अगले वर्ष स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश कर रही है। स्वर्ण जयंती समरोह के कार्यक्रम दो चरणों में होंगे। 1998-99 में बहुत बडा एक दिन का अधिवेशन जो 25000 छात्रों का रहेगा मुंबई या नई दिल्ली में होगा।

प्रश्न ५ : आपके दृष्टिकोन से देश के सम्मुख सब से गम्भीर समस्या कौन सी है?

उत्तर : आज देश के सामने इतनी अधिक समस्याएँ है कि उन में सबसे गम्भीर समस्या तय करना जरा कठिन कार्य है। फिर भी आज भ्रष्टाचार देश में इतना बढ़ गया है, इसकी जड़ समाज जीवन में इतनी गहरी हो गई है कि ये देश के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह बन गया है। दूसरी तरफ राजनीति में प्रतिदिन धारणाएँ बदल रही है, दिन प्रतिदिन मूल्यों का ऱ्हास हो रहा है। राजनीति में शुचिता का पूर्णत: अभाव हो गया है। मै समझता हूं कि सारी समस्याओं के मूल में यह है।

प्रश्न ६ : आम छात्रों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

उत्तर : स्वातंत्र्य के 50 वर्षों के बाद भी आज देश के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ है। यह जीवन स्वयं के लिये नही, अपितु राष्ट्र के लिए हो यह दृढ संकल्प लेना होगा। हम एक राष्ट्रभक्त छात्र है, नागरिक है, इसलिए हमें चुनौतियों का डटकर मुकाबला करना होगा तब जाकर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का लक्ष्य पुरा हो सकेगा और हम भारतमाता को पुन: परम वैभव पर ले जायेंगे।

* * * * *

Patriot Netaji Subhash Birth Centenary Celebrated in Bidar.

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad Bidar chapter celebrated birth centenary of great feedom fighter Netaji Subhash Chandra Bose at Saraswati High School campus on 24 the Jan. 1997.

A huge 'Shobhayatra' of 1000 students, including 300 girls and 100 teachers was started from Ganesh Maindan. Inauguration of this shobhayatra was done by Shri S.B.Sajjan Shetty, State-Vice president of ABVP. In his inaugural speech Shri Sajjan Shetty said that today's students are not getting proper knowledge through there education about our national heros. So sicne last 50 years ABVP is continuously trying to give more and more knowledge about such ideal heros through its constructive programmes.

This shobhayatra marched through the streets of Bidar city and culminated in a public meeting. Shri S.V.Juja, ABVP city president welcome the audience.Chief speaker Shri P.M. Galgali (Gulbarga) had delivered the speech on this occasion. He explained detailed life history of Netaji right from his childhood and call the young generation to make their ideal hero Netaji Subhash not to Amitabh Bachhan.

Prizes to the winners of district level speech, essay, patriotic song competition held earlier, were also delivered in this programme. Siudent from 18 schools and 6 colleges was participated in the shobhayatra. The public function ended with vote of thanks delivered by Shri Ashok Hokarna, ABVP city secretary.

पर्यावरण संरक्षण

दैनिक जीवन के योग्य कुछ सलाहें

इतना फर्निचर!

दरवाजे पर पायदान के लिये लकडी की चौकट, बाहरी कमरे में किताबें (जादातर अनपढ़ी) के लिये लकड़ी की शेल्फ, बढ़ियासा लकड़ी का सोफासेट, लकड़ी पर नाजुक कशतकारीवाला सुंदरसा चाय का टेबुल, टी.व्ही. और टैपरेकार्डर के लिये शानदार कैबिनेट, लकड़ी का पलंग, पढ़ाई के लिये टेबुल और कुर्सियाँ, खाने का टेबुल, रसोईघर में सामान रखने के लिये अलमारियाँ, शो-केस और भी बहुत कुछ....

शहरी इलाकों के दो-तीन कमरों वाले मकानों में इतना सारा लकड़ी का सामान होता है। इन मकानों में रहने वाले लोगों ने कितने पेड़ लगाये होंगे? कितने पेड़ इन्होंने इस्तमाल किये? क्या हम इस नैसर्गिक संपत्ति का दुरुपयोग नहीं कर रहे?

क्या वास्तव में इतने वृक्षों का उपयोग करना आवश्यक है? क्या हम जमीन पर बैठकर पढ़ नहीं सकते?, खा-पी नहीं सकते? शायद यह हमारी सेहत के लिये भी अधिक अच्छा है। हम जमीन पर चटाईयाँ बिछाकर भी सो सकते है।

घर के लिये फर्निचर आवश्यक है लेकिन हम अपने घरों में इसका उपयोग आवश्यकता से कुछ ज्यादा ही करते है। हमारे ऐषोआराम के लिये कई वृक्षों ने अपना बलिदान दिया है। आइये, हम अपनी फर्निचर की आवश्यकताओं को न्यूनतम करके उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करें।

Environment Protection

Tips for day to day life

Well Furnished!

Wooden bracket and frame for door mat at the door step, Wooden book shelf for books (mostly unread!) in the living room, lavish wooden sofa sets, delicate tee-poi with wooden carvings, impressive case for TV and cassette player, wooden doubble bed, study table and chairs, dining table and chairs, wooden shelves and cupboard for kitchen ware, wardrobe, show case...

A typical two-room-kitchen flat in our urban areas has so many wooden items. How many trees are planted by the family staying in this flat? How many trees it has used? Aren't we misusing the traditional natural wealth?

Is it really necessary to use so many trees? Can we not squat on ground for studying or eating? Perhaps it is better for our health. We can spread mats on ground for sleeping.

House needs some furniture but we use a lot of unnecessary furniture in our homes. Many trees have sacrificed their lives for our luxury. Let us pay them homage by reducing our furniture needs to minimum necessary level.

Sorry

Due to unavoidable circumstances we are not able to print prespective and state seene in this issue.

-Editor

Dear Readers,

We invite you to send in your contributions. They could be in any form letters, short articles, news and even poetry, either in Hindi or English language. Please ensure that you write clear hand/typed, on one side of a sheet. Looking forward to your reactions then!

-Editors

NETA who have distanced themselve from NETAJI are rejected by JANTA

- Shri Mahedra Kumar

Cuttack-23: "The leaders who have distaced themselves from Netaji are rejected by people", asserted Shri Harendra Kumar, former all India General Secretary and leading student leader of Jayprakash Narayan movement. Mr. Harenda Kumar was addressing mammoth students rally of twenty thousand young students of the state who had assembled before Netaji statue of famous Ravenshaw college square, Cuttack to celebrate Birth Centenary of Netaji Subhas Chandra Bose who had taken birth in the historic city hundred years ago. The massive students rally said to be the largest ever students gathering of the state was named as SWABHIMAN SAMABESH. Shri Harendra Kumar in the begining of his long emotional talk expressed deep sorrow for absence of representative of central or state Government or leader of any political party in the mid-day programme of Netaji's ancensterial house of Odiya Bazar in the exact place and time when Netaji had taken birth. Earlier the students in the colourful procession crossed main through-path of Cuttack with surcharging atmosphere with nationalistic slogans.

Assessing fifty years of Indian independence Shri Harendra Kumar expressed concern over several fronts despite rapid growth in many. He expressed his happiness for survival of India as a matured democracy for all the years while

A massive stduent rally in Cuttack led by Shri Komal Kishore Naik, ABVP State President And Shri Suren Chand Tude, State Secretary.

neighbouring countries have come under dictatorial regimes for several times. While Indira Gandhi tried to impose his autocracy over Indian soil, he was answered by poor illeterate mass of this country in a befitting manner, where lies the inner strength of this great historic nation Shri Kumar claimed. Despite development, the poverty, illeteracy, under development, are posing several challenges before the nation. He criticised and blamed political leaders for their shortsightedness and who have never come above their narrow political and personal benefits. The present scenario at top political and bureaucratic level is the climax since at no time of Indian history so many scams and scandals had come before the masses. It is right time for people of this country to be vigilant and to come forward before their country is ruined by corrupt politicians.

Speaking on the youths of the country Shri Kumar was astonished Subhash could abondon his ICS Degree and compromise with his personal career for career of his nation but tallented youths today are prepared to sacrifice their mother land and go to serve alien nations for their personal career. Subhas's rousing call to youth of the nation for DELHI CHALO created in all corners. Youths with arms in their hands rushed to Delhi, but today youth with Chinese and Pakistani rifles killing their country men for their misguided interests. The activities in many parts of the country is product of that. Analysing lack of patriotic spirit among post indepedence generation of the

country as the single most impotant failure. Shri Harendra Kumar blamed successive governments for they deliberately did not project personalities like Subhash and other revolutionaly youth leadrs as ideals before them. Rather one single family of Nehru's was super imposed before entire nation as heroes of freedom struggle. Which Shri Kumar felt to be the Himalyan error and that is singularly responsible for all disadvantges from which the entire nation and specially the youths of this country are suffering from.

For solution of all problems of the country Shri Harendra Kumar called for change in attitude and approach. The leaders of this country who assessed that terrorism in Kashmir is due to lack of economic development, failed to recognise the fact that - if at all economic development is linked with terrorism then Orissa, Bihar and Madhya Pradesh first would have been terronist affected. Why then the youths of the richest Pubjab went for violent determined bid for separate Khalisthan? Harendra Kumar maintained that partriotism cannot be battered with money.

With several attacking communities, who branded Subhash as agent of Fascists due to his links with Japan and Germany, who welcomed chinese attack on India, who have still under their flag West Bengal and Kerala the important Home portfolio at centre are the real trators. It is right time to see that they are rejected from Indián soil as they have faced in all former Red Countries of Estern Europe, Russia and elsewhere.

The public meeting was presided over by state President of ABVP Prof. Kamal Kishore Naik, State Secretary Suren Chand Tudu, student leader from Sambalpur, Addressing the rally students union president of Ravenshaw College, Mr. Saroj Samal demanded the Ravenshaw college where subhash Bose was a student to be named after Netaji. Chairman of the Citizens Reception committee and former Director general of Orissa police Mr. Rabinarayan Mohapatra delivered welcome address. General Secretary of Reception committee and MLA of Cuttack city Samir Dey also addressed the students. Cuttack unit Secretary Rabindra Sil proposed vote of thanks.

महाकोशल में 'सुभाष संदेश यात्रा' उत्साह से सम्पन्न

इस साल मनायी जा रही नेताजी सुभाष की जन्मशताब्दि के उपलक्ष्य में महाकोशल प्रांत में दि. 4 जनवरी से 22 जनवरी तक 'सुभाष संदेश यात्रा' का आयोजन किया गया था। इस यात्रा का उद्घाटन दि. 4 जनवरी को रिवा में, प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि तथा नेताजी के जीवन के प्रमुख भाष्यकार, उज्जैन के डा. श्री. कृष्णसरल ने किया।

दो हजार किलो मीटर लंबे इस यात्रा में 17 प्रमुख स्थान तथा अन्य 11 स्थानपर ऐसे कुल 28 स्थानोंपर कार्यक्रम हुएं। यात्रा का स्वरुप प्रमुखत: शोभायात्रा, सार्वजनिक सभा, चित्रप्रदर्शनी, साहित्य विक्री आदि रहा।

नेताजी सुभाष की जन्मशती इस साल बड़े पैमानेपर करने का निर्णय विद्यार्थी परिषदने किया था। इसके अनुसार ही महाकोशल में इस भव्य संदेश यात्रा की तैय्यारी भी बड़े जोरों से हुई जिसमें प्रांत के कई भागों में सामान्य ज्ञान तथा देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिताएँ, निबंध, प्रश्नमंच, भाषण, शालाओं में नेताजी सुभाष के चित्रों की स्थापना आदि कार्यक्रम प्रमुख रुप से रहे।

जगह जगह पर यात्रा का उत्स्फूर्त स्वागत हुआ। यात्रा में विविध संस्था तथा प्रतिष्ठानों ने 2900 से अधिक जगह पर इसका स्वागत किया। यात्रा में कुल मिलाकर 2388 छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हुई थी। यात्रा में जगह जगह पर हुई सभाओं में 119 गाँवों से 13620 लोगों का सहभाग रहा।

दि. 22 जनवरी को इस 'सुभाष संदेश यात्रा' का समापन जबलपूर में अ.भावि.प. के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. डी. मनोहरराव की विशेष उपस्थिती में हुआ। समापन भाषण में उन्होंने नेताजी जैसे आदर्श जीवन जिने का तथा देश की स्थिति को देखते हुए जरूरत पड़नेपर अपना खुन देने के लिये भी तैय्यार रहने का आहवान किया। शताब्दि मनाना, कार्यक्रम करना यह बात तो आसान है लेकिन आज आवश्यकता है नेताजी सुभाषने दिखाये हुए मार्गपर चलने की जो आज के छात्रों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। अंत में उन्होंने निराशा से घिरी हुई परिस्थिति के संदर्भ में नेताजी के "विचार, आदर्श एवं सपने कभी नष्ट नही होते।" इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए सभी लोगों ने निरंतर देश कार्य करना चाहिये ऐसा भी आग्रहपूर्वक कहा।

नेताजी सुभाष का राष्ट्रवाद

अगर हम भारत के स्वतंत्रता संग्राम के उस काल पर दृष्टीपात करें जो रशिया में आए साम्यवाद के बाद का समय है तो यह कहने में जरा भी अतिश्योक्ति न होगी कि गांधीजी को छोड़कर उस युग की करीब-करीब सम्पूर्ण युवा पीढ़ी भारत की गरीबी, भूख, नग्नता, शोषण, बेरोजगारी, जमीदारी आदि समस्याओं को समाधान या इन समस्याओं को समाप्त करने का करिश्मा एक मात्र साम्यवाद या वामपक्ष में ही देखती थी। वे चाहे भगतसिंह थे, नेहरु थे या चाहे सुभाष ही क्यों न थे। एक गांधी ही ऐसे युग पुरुष थे जिन्होंने इस देश की आर्थिक समस्याओं का समाधान इस देश की माटी से या स्वदेशी से ढूँढने का प्रयास किया था।

इसका एक कारण यह भी हो सकता है जैसे आज की पीढ़ी के सामने स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास पूर्ण सत्यता को लेकर नहीं आया केवल कांग्रेस ही इस संग्राम की रीढ़ का हड्डी या स्वतंत्रता दिलाने वाली संस्था रही है और बाकी सभी शहीद गर्त अंधकार में चले गए। उसी प्रकार उस युग के युवकों के सामने भी भारतीय अर्थदर्शन और उसमें निहित भारतीय समस्याओं के समाधान की बात रखी ही नहीं गयी। उबलता खून जल्दी समाधान चाहता था और साम्यवाद तथा रशिया उसके सामने विकल्प थे। अतः युवकों का उनकी ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक था। परन्तु सुभाष का साम्यवाद या कम्युनिजम की ओर झुकने का अधिक प्रश्न नहीं उठता। सुभाष का अर्थवाद और राष्ट्रवाद दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है।

सबसे बड़ी बात तो मूल में कुठाराघात करती है कि जिस व्यक्ति की किशोरावस्था ही धर्म, अध्यात्म और सन्यास की नींव पर खड़ी हो उसका साम्यवाद की ओर जाने का तो प्रश्न ही कहां खड़ा होता जो दोनों ही एक दूसरे के पृथक और विरोधी तत्व है। और न ही साम्यवादियों ने कभी सुभाष का स्वीकार किया है। उन्होंने तो सुभाष को गालियों के सिवा और कोई भेंट दी ही नहीं। काला कारुक, काला जहाजी, गद्दार बोस, दुश्मनों का भाड़े का दलाल, हिटलर और तोजो का अग्रिम रक्षक, धुरी राष्ट्रों का भाड़े का टट्टु, राजनीतिक विष-कीट, जहरीला कोड़ा विदेशी हमलावरों का दलाल आदि-आदि । समाचार पत्रों में उनके छपेकार्टून

इस बात की गवाही देते है कि सुभाषबाबू के राष्ट्रवाद पर कम्युनिस्टों ने इस हद तक आरोप लगाये कि सुभाष और साम्यवाद का नाता ढूँढने की कल्पना करना भी बेकार है। दूसरे एक बात की ओर भी ध्यान आकृष्ट करने की आवश्यकता है कि सुभाषबाबू ने कभी भी भारत विभाजन का समर्थन नहीं किया। उन्होंने भारत विभाजन का खुलकर विरोध करते हुए इसे अंग्रेज दिमाग की खुराफात बताया। जैसे अंग्रेजों ने धीरे धीरे भारत से बाकी अंग अलग किये है। वे लिखते है कि, **''पाकिस्तान या भारत के बँटवारे की योजना के जनक अंग्रेज स्वयं हैं और वे इसके पक्ष में बड़ा जबरदस्त प्रचार कर रहे हैं। और अगर उनका बस चलता तो दो ही नहीं, पाँच या छह देशों में बाँट देते। पाकिस्तान निश्चय ही अजीब काल्पनिक और अव्यवहार्य वस्तु है एक नहीं अनेक कारणों से। भारत भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि एक अविभाज्य इकाई है।''** इस प्रकार सुभाष बाबू ने भारत विभाजन का खुलकर विरोध किया। परन्तु एक राष्ट्र में अनेक राष्ट्र की संस्कृति में पनपने वाले साम्यवादी भारतीय संस्कृति को कहाँ समझ सकते। ''भारत अनेक स्वतंत्र राष्ट्रों का जमावड़ा है।'' इनमें कई की राष्ट्रीयताएँ दमित कर दी गई है। ऐसी ही एक दमित राष्ट्रीयता मुसलमानों की है। पाकिस्तान की मांग एक न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक मांग है। भला सुभाष और साम्यावादियों के मेल कहाँ बैठता।

हाँ यह बात ठिक है कि जिस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए गांधी और सुभाष में साधन का ही मतभेद था। उसी प्रकार सुभाष बाबू को गांधी का अर्थवाद भी ढीला लगता था, परन्तु वह इस देश की माटी की सुगंध से उभरा था, इसकी जड़े बड़ी गहराई तक गई हुई थी। यह अर्थवाद भारतीय रक्त के साथ संचार कर रहा था। इसकी गति धीमी हो सकती थी जैसा कि सुभाष ने कहा ''इसमे कोई संदेह नहीं कि महात्माजी आधुनिक जगत की मशीनी सभ्यता की निंदा करते है और उस पुराने युग के अनुरागी है जब मनुष्य घरेलु उद्योगो से संतुष्ट रहता था और उसकी आवश्यकताएँ सीमित थी। परन्तु इसका मतलब यह भी नही कि साम्यवाद ही भारत की समस्याओं का समाधान है। सुभाष ने कभी भी साम्यवाद को भारत का हितचिंतकवाद नही माना। प्रारंभ में वे भले ही साम्यवाद और फासिस्टवाद दोनों के अच्छे गुणों का भारत के लिए समन्वय कर समन्वय का सिद्धान्त मानते परन्तु बाद में जब उन्होंने वास्तविकता

को देखा तब वे स्वयं स्वीकार भी करते है कि, ''जब तीन साल पहले मैंने यह पुस्तक 'द इंडियन स्ट्रगल' लिखी थी। तब से मेरे विचारों में और विकास हुआ है। मै यह भी स्पष्ट करना चाहूँगा कि जो लोग भारत में साम्यवाद के समर्थक माने जाते थे उन्होंने जिस ढंग से कम्युनिजम को वहाँ प्रस्तुत किया है वह मुझे राष्ट्रविरोधी लगा। इससे पूर्व ऊपर निर्दिष्ट पुस्तक में भी सुभाष ने भारत में कम्युनिजम के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है और भारत का वर्तमान आंदोलन राष्ट्रवादी आंदोलन है। मार्क्सवाद को अपनानेवाले रूस के बारे में वे लिखते है कि ''मार्क्सिज़म को स्वीकारते समय भी रूस अपने प्राचीन इतिहास की धारा, राष्ट्रीय आदर्श, वर्तमान परिवेश एवं नित्य नैमित्तिक जीवन की प्रयोजनीयता को भूल न गया था इन बातों की चर्चा की अनिवार्यता यह है कि मै स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि किसी अन्य देश का अन्धानुकरण का मै विरोधी हूँ और बिना इस बात का उल्लेख किये अपनी बात साफ नही कर सकता कि पराधीन देश को यदी कोई भी 'इजम (ism)' अन्तर से ग्रहण करना है तो वह है नेशनालिजम। दूसरे रूस अब अपना बचाव करने की नीति अपना रहा है और विश्व क्रान्ति में अब उसकी कोई रुचि नहीं है भले कम्युनिस्ट इंटरनेशनल इस तरह दिखावा करता रहे। रुस ने हाल में ही पूंजीपति देशों के साथ जो समझौते किए है और राष्ट्र संघ की उसकी सदस्यता चलते रूस की एक क्रान्तिकारी शक्ती के रूप में जो छवि थी वह मंद पड़ गई। यहाँ सुभाषबोस की एक तरह से दूरदर्शिता का भी पता चलता है कि जिस बात को सुभाष 1935 में रूस के वर्तमान भविष्य को पहचान गए थे उसे स्वतंत्र भारत के कहलाते रहनुमा नेहरु न पहचान पाये और वे स्वतंत्रत भारत की सम्पूर्ण अर्थनीति को उसी रूस की ओर ले दौड़े जो आज स्वयं छिन्न-भिन्न होकर न खुद दिवालियेपन की स्थिती में खड़ा है अपितु हमें भी उस स्थिती में ला खड़ा किया है। इसके अन्य कारणों की चर्चा करते हुए वे कहते है कि **''रूस में कम्युनिजम का विकास धर्म विरोधी और नास्तिकतावादी रुप से हुआ है। जबकि भारत में धर्म के प्रति ऐसी कोई विरोधी भावना नहीं रही जैसी रूस में रही।** चौथे इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या को, जो कि कम्युनिस्ट सिद्धान्त का दिशा बिन्दु है। भारत में वे लोग भी संपूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पायेंगे जो इसके आर्थिक सिद्धान्तों के मानने के प्रचारक होंगे?

पांचवे यद्यपि आर्थिक दृष्टी से कम्युनिजम की बहुत भारी देन है। जैसे कि राजकीय आयोजन का विचार किन्तु अन्य कई दृष्टियों से यह काफी दुर्बल है। उदाहरण के लिए जहाँ तक भौतिक समस्या की बात है कोई नया विचार नहीं दिया है। अतः यह भविष्यवाणी विश्वासपूर्वक कही जा सकती है की भारत सोवियत रूस का नया संस्करण कभी नहीं बनेगा।

सुभाषबाबू को कम्युनिजम का पक्षधर कहना उनके प्रति अन्याय करना होगा क्योंकि वे साम्यवाद का भविष्य भांप गए थे। उसकी चमक केवल एक बिजली का बादलों में कौंध जाना मात्र था। उनके जैसा राष्ट्रवाद का समर्थक भला साम्यवाद का पक्षधर कैसे हो सकता है? जिसे अपने देश के धर्म के प्रति, उनकी संस्कृति के प्रति उसके प्राचीन गौरवमय इतिहास और उसकी भव्य विशाल परम्परा के प्रति आस्था कूट-कूट कर भरी हो। इनके शब्दों में ''कुछ लोग अन्तर्राष्ट्रीयता की अपेक्षा राष्ट्रीयता को संकीर्ण विचारधारा मानते है। उनकी दृष्टी से यह स्वार्थ और आक्रामक प्रवृत्ति से परिपूर्ण है। मेरी दृष्टी में भारतीय राष्ट्रीयता न संकीर्ण है, न स्वार्थी और न आक्रामक। वह सत्यं शिवं सुन्दरम् के महान आदर्शों से प्रेरित है। भारत में राष्ट्रीयता ने हमे सच्चाई, ईमानदारी, मानवता की सेवा, बलिदान की भावनाने अनुप्राणित किया है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इसी भावना ने सदियों से हमारी सर्जनात्मक प्रतिमाओं को जागृत किया है। परिणाम स्वरूप भारतीय कला के क्षेत्र में हम एक नयी चेतना का अनुभव कर रहे है। अपने अतीत के प्रति गौरव का अहसास करते हुए वे कहते है कि **''मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो आधुनिकता के जोश में अपने अतीत के गौरव को भूल जाते हैं। हमें भूतकाल को अपना आधार बनाना है। भारत की अपनी संस्कृति है। जिसे उसे अपनी सुनिश्चित धारओं में विकसित करते जाना है। दर्शन, साहित्य, कला और विज्ञान में विश्व को देने के लिए हमारे पास बहुत कुछ नया है और संसार उसकी प्रतिक्षा कर रहा है।''** क्या यह साम्यवाद के लक्षण है? फिर भी उन्होंने राष्ट्रीय पुनः निर्माण के लिए देश से गरीबी को दूर करना, भूमि व्यवस्था में परिवर्तन, जमींदारी प्रथा का उन्मूलन, किसानों के कर्जो की समाप्ति, सस्ते दरों पर ऋण व्यवस्था और वैज्ञानिक तरीकों से खेती का विकास जैसे मार्गो को अपनाने का दिशा निर्देश किया, जिसे हमने अपनाया। अतः उनका प्रथम लक्ष्य स्वतंत्रता प्राप्ति था ''भारत तू आज़ाद हो जा''। अतः स्वतंत्रता के लिए, आज़ादी के लिए उन्होंने किस हथियार का, किस व्यक्ति का, किस देश का, किस भूमि का उपयोग किया उसे उनकी विचारधारा से जोड़ना उस प्रखर राष्ट्रवादी, राष्ट्र चिंतक और राष्ट्र सपूत के प्रति घोर अन्याय करना होगा। वे तो स्वयं में धर्म, अध्यात्म और राष्ट्रवाद के त्रिवेणी संगम थे।

उपसंहार

पांच वर्ष की आयु में अंग्रेजी स्कूल में फूटे दासता से मुक्ति के बीज जीवन के अंतिम क्षणों तक निरन्तर जीवन्त रहे। वे जानते थे कि विराट, वैभवशाली, महान सांस्कृतिक विरासत, विराट प्राकृतिक सम्पदाओं से परिपूर्ण विशाल मानवबल से भरेपूरे इस राष्ट्र में क्या नही है। परन्तु यह दासता, यह गुलामी न केवल उसके तन को अपितु उसके मन प्राण को खोखला और निष्प्राण किये जा रही है। अतः इस दासता के राक्षस का संहार जितना शीघ्र हो सके उतना इस राष्ट्र का पुनःनिर्माण शीघ्र संभव हो सकेगा। अतः उन्होंने इसके लिए साधनों की कभी

Contd. on page No. 12

12 जनवरी को शिमला में 'नेताजी सुभाष सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता' का पुरस्कार वितरण

पुरस्कार वितरण समारोह में मंच पर दाएँ से प्रदेश संगठन मंत्री श्री. महेंद्र धर्माणी, डॉ. चमनलाल गुप्ता, राष्ट्रीय महामंत्री श्री. महेंद्र कुमार प्रमुख रा. स्व. संघ के सह प्रांत प्रचारक श्री. महावीरजी एवं प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजेश्वर चंदेल

15 दिसंबर 96' को हिमाचल प्रदेश इकाई द्वारा नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जन्मशती कार्यक्रम के उपलक्ष्य में ''नेताजी सुभाष सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता'' आयोजित की गई थी। जिसका ''पुरस्कार वितरण समारोह'' 12 जनवरी 1997 को शिमला में संपन्न हुआ।

परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेन्द्र कुमारजी ने प्रदेश के पुरस्कार विजेताओं के पुरस्कार प्रदान किए।

प्रथम पुरस्कार (2100/- रु., पुस्तक, डायरी, प्रमाणपत्र, प्रशस्तिपत्र एवं टोपी) पावटा साहिब के मनीषा गोगना ने प्राप्त किया।

द्वितीय पुरस्कार (1100/- रु. पुस्तक, डायरी प्रमाणपत्र, प्रशस्तिपत्र एवं टोपी) धर्मशाला की छात्रा माला शर्मा को प्राप्त हुआ।

तृतीय पुरस्कार (500/-रु., पुस्तक, डायरी, प्रमाणपत्र, प्रशस्तिपत्र एवं टोपी) कुल्लू के छात्र अभय अग्रवाल को प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त 100-100 रु. के दस सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए।

पुरस्कार प्रदान करने के उपरान्त परिषद के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री. महेन्द्र कुमार ने देश के वर्तमान परिस्थिती पर बोलते हुए समाज एवं युवाओंसे देश के चुनौतियों को स्वीकार करते हुए उनसे लड़ने का आह्वान किया।

★ ★ ★

राष्ट्रनायक सुभाषचन्द्र बोस जन्मशती के बिहार में विविध कार्यक्रम

बिहार प्रदेश के सभी जिलों में सुभाषचंद्र बोस जन्मशती के अवसर पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम हुए।

18 जनवरी 1997 को गोमो रेलवे जंक्शन पर हुए कार्यक्रम में दक्षिण बिहार के जिलों से 300 कार्यकर्ताओं का सहभाग रहा। उत्तर मध्यांचल के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री. हरेन्द्रकुमार इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। उन्होंने कहा कि आज देश के सामने युवा सुभाष का चित्र रखना होगा और आज के युवाओं को सुभाष के आदर्शों पर चलकर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए तन-मन-धन से लगना होगा। इस कार्यक्रम में एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें माँग की गई कि गोमो जंक्शन का नामान्तरण करके उसका नाम नेताजी सुभाषचन्द्र बोस नगर जंक्शन रखा जाए।

पटना में नेताजी की प्रतिमा के पास कार्यक्रम हुआ, जिसमें निवृत्त मेजर जनरल श्री. के. बी. सिंह मुख्य अतिथि के रूप में थे। इस अवसर पर मेधा प्रतियोगिता के विजेताओं को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान किये।

गोड्डा में नेताजी सुभाष जन्मशताब्दी समारोह पर सात दिनों तक कार्यक्रम हुए जिसमें निबन्ध प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, मेधा प्रतियोगिता, दौड प्रतियोगिता, शोभा यात्रा, साईकिल एवं मोटर साईकिल यात्रा जैसे कार्यक्रम हुए।

धनबाद जिले की निरसा इकाई द्वारा नेताजी की प्रतिमा को सार्वजनिक स्थान पर स्थापित किया गया, जिसका उद्घाटन प्रदेश संगठन मंत्री श्री. अनिल ठाकुर ने किया।

बिहार की नवादा, मुजफ्फरपुर, मिहिजाम, भागलपुर एवं सासाएम सहित अन्य इकाइयों में भव्य एवं बड़े पैमाने पर कार्यक्रम हुए।

Contd. from page No. 10

परवाह न की थी। और दासता से मुक्ति के लिए भला साधन का बंधन मे कहां से? इसीलिए व कांग्रेस मे रहे तब भी महात्माजी से कभी निजी विरोध न था, न गांधीजी को सुभाषबाबू से था। अंतर केवल यही था कि जहां गांधीजी सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, साधन शुद्धि और एक संत की भूमिका अदा कर रहे थे वहां आनेवाले कल की राजनैतिक विचक्षणता एवं समय पर चोट करनेवाला नेतृत्व, आनेवाले कल को भाँप लेनेवाले के रूप में दृष्टा हम सुभाषबाबू को पाते है। राजनीति चाहे सिद्धान्तों की हो, राजनीति चाहे विचारों की हो, राजनीति चाहे शस्त्रों की हो या राजनीति चाहे सेना तैयार कर शत्रु पर आक्रमण करने की हो, सुभाषबाबू का लक्ष्य यह था कि अंग्रेजी सल्तनत के वे क्रूर राक्षसी पंजे टूटे जाने चाहिए जो इस राष्ट्र के जनमानस के मन, प्राण और आत्मा को कुचल रहे है। उसे प्राणहीन बना रहे है। इसीलिए तो विदेश की धरती से भी बापू को आहवान करते रहे। दूसरे शब्दों में कहे तो निजी तौर पर गांधीजी का भी सुभाषबाबू से विरोध नहीं था वे उन्हें अपना मानसपुत्र मानते थे।

अतः हम कह सकते है कि मां भारती की कोख से अनेक अमूल्य रत्न पैदा हुए। परन्तु सुभाषबाबू एक अद्भुत रत्न थे। एक साथ धर्म और अध्यात्मिकता, राष्ट्र की राजनीति के बीच स्वतंत्रता के लिए जूझनेवाला योद्धा, ब्रिटिश साम्राज्य का पतन हो इसका दृढ़ विश्वास रखनेवाला आर्षदृष्टा, शत्रु से शत्रुता ही नहीं उसे घृणा करना भी सीखो, और शत्रु के शत्रु को मित्र बनाने की राजनीति रखनेवाला विचक्षण चाणक्य सा राजनीतिज्ञ 1928 में ही पूर्ण स्वराज्य की मांग, जर्मनी दूसरे विश्व युद्ध का निश्चित रूप से आहवान करेगा को परखनेवाला पूर्ण स्वराज्य का उद्घोषक 1939 में ही "करेंगे या मरेंगे" संघर्ष का आहवान और फिर विदेशी धरती पर भारतीय रक्त से स्वतंत्रता का इतिहास लिखनेवाला आर्षदृष्टा था सुभाष। **वीर योद्धा, कुशल सेनापति, सफल व्यूहरचनाकार थे सुभाषबाबू। राष्ट्र के युवकों के समक्ष हम भी लड़ सकते है, हम में भी शक्ती है, हम भी वीर इतिहास के परिचायक हैं, खून दिये बिना कभी स्वतंत्रता न प्राप्त हुई है और न होगी। अतः "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा" की चेतना का संचार करनेवाले एक प्रखर राष्ट्र चिंतक थे सुभाषबाबू।** जीवन मे सुख का भागाकार और दुःख का गुणाकार करनेवाला, त्याग करने के समय पीछे मुड़कर न देखनेवाला कोई विरल व्यक्ति था। फिर भी यदि कहें तो सुभाषबाबू जीवन में सबसे अधिक विवादास्पद व्यक्तित्व के रूप में रहे। न तो वे शस्त्र क्रान्तिकारियों को अपना सके क्योंकि वह शक्ति इतनी कम थी कि उससे को केवल ब्रिटीश साम्राज्य के फांसी के फंदों की रक्त पिपासा ही बुझती रहती। इस दृष्टी से गांधी को सही मानते हुए भी गांधीजी का नेतृत्व और उनके साधन इतने ढीले लगते कि उससे तो न जाने कितने जन्म निकल जाएँगे यह आशंका बनी रहती। अतः इन दोनों के बीच वे अपने आपको हमेशा विवादास्पद व्यक्ति के रूप में विवादों और समय की चाल पर हमेशा रहस्य बनते गए। बचपन से लेकर अंत तक वे किसी के न हो पाये कविवर माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों में "उनकी अनन्त असफलताएँ और मोह भरी अगणित सफलताएँ भारत को संपूर्ण सफल बनाकर गौरवमयी हो गयी है। क्रियाशील, स्वप्नदर्शी, भक्त और साधक जब अपने संकल्पों पर समर्पित हो संघर्षो पर उतरता है तब उस व्यक्ति की असफलताएँ समाज और समूह की सफलता बनकर देशों के रक्त में लौटती आयी है।"

"तुम अरविन्द के न हुए,
तुम गांधी के न हुए,
तुम सेनगुप्त के न हुए,
तुम जवाहर के न हुए,
तुम अपने न हुए,
तुम हुए केवल मातृभूमि के, भारत भूमि के।"

इसका एक कारण यह भी था कि "वीर पुरुष या तो रास्ता खोजते हैं या खुद बनाते है।" उनका पूरा व्यक्तित्व लीक से हटकर चलनेवाला एक प्रखर संघर्षशील, राष्ट्रभक्त, राष्ट्रवादी और राष्ट्रचिंतक का व्यक्तित्व था अगर ऐसा कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी के ये शब्द "मृत्युंजय सुभाषचन्द्र बोस अमर रहे" उस कुशल राष्ट्र प्रहरी की परिपूर्णता के उद्घोषक रहेंगे।

(सौजन्य से: 'राष्ट्रनायक सुभाषचंद्र बोस'
- डॉ. सुभाष भाटिया)

TERRORISM

End the terrorism,
Bury the terrorism.
For ugly is its face,
Dark is its phase,
Draconian are its laws,
Bloody are its paws.
Not only does it disturbs the peace,
But also chops people to piece.
Therefore End the terrorism,
bury the terrorism.
Venomous are its teachings,
Unvindictive are its preachings.
It thrives on narrow ways,
and survives on wide sways.
It shuns symbioism and
Propounds fundamentalism.
Not only does it shed innocent blood,
But also forces many women into widowhood.
Hence End the terrorism,
Bury the terrorism.

Sudhir R. Pai

A Gift of Nature : Assam

Alert to every little movement in the night. On the road, behind the continuous trees lining the roadside, and even in the compounds of homes along the way. Akhay Kalita's Armada and Shib Basumatary's Ambasador sped towards the Bramhaputra. Carrying a bunch of "Mumbaikars", the two drivers were taking a great risk. This was afterall the Nagaon district of Assam, the bastion of the dreaded ULFA (United Liberation Front of Assam.) Every little happening was closely monitored by the organisation. And nobody dared oppose its writ. "Outsiders" were forwned upon and could travel at their own risk. This could mean anything. Plain and simple extortion, or kidnapping or even mortal bullet wounds. Once in the hands of ULFA or once caught crossing their way nobody could save you. Understandably Akhay and Shiba were unbearably tense as they dorve fast to the sanctity of the "Rest House" in Tezpur town.

Such was our first brush with "reality" in Assam. Till then Guwahati's pleasant environs had put us into a happy holiday spirit. We had wandered for hours along the Bramhaputra. It's sheer size and majesty taking our breath away. It's waters seemed still, almost stagnent, until a local informed us of very strong undercurrents beneath its placid surface. Not at all unlike Assam, we were to find out later. The Bramhaputra looked gigantic almost a sea, with huge islands in its course, from atop the Kamakhya hill. The barges and ferrys which appeared so huge on the banks were nothing more than little dots in a sea of blue. One could easily imagine its rage during the yearly floods. A sleeping gaint awakened and angry, ready to destory everythig around it. The Bramhaputra is an integral part of Assam life, we realised as we took in its grandeur again from the hill of the enchanting Nabagraha Temple in Guwahati. This unique temple is devoted to all the nine grahas. Devotees performed puja of the "graha" they wanted to "placate", in its sanctum sanctorum. No queues no crowds jostling for a "darshan", on vendors pestering you to buy flowers and no beggars.

We roamed about Guwahati, taking in the cool, clear skies framed by lush green trees. Peeping into handicraft and silk shops, feasting on a sweet tender coconut here and fresh fruit there. Lunch was a simple meal of tasty soft rice, fresh water fish cooked in a mouth watering blend of spices and a tangy, hot chutney with ample salad, topped up with the famous "Mishti-Doi".

Tummies over-full, minds relaxed by the calm and quiet of Guwahati, our vehicles sped towards Tezpur, on the way to Arunachal Pradesh. The Assam country side was a treat to sore eyes of Mumbai. Green paddy fields, interspersed with bamboo clumps straight upto the horizon. Constant greenery all around you, not a patch of barren land! Wow. This was Assam. Single storeyed, sprawling houses with the inevitable adjoining "Pukhri" (pond) broke the green once in a while.

If only one could wangle an invitation into one of those houses. What bliss to laze under the shades of palms by the side of the Pukhri. Watching fish swim by and ducks wadle around. The wind would sing in the bamboo bushes and may be a belle and her beau would dance the graceful "Bihu" to its tune. And soon millions of stars would appear, appreciating and applauding.

Appear they did. But they brought with them suspicious stares of the locals, as we set sipping tea at Naogaon. Who are these people? Why are they travelling so late? Why are they here in the first place? Nosy journalists trying to cook up acatchy story? Or New Delhi babus, wanting to report on us? Or may be Kin of the hated army personnel? Hostility writ large on the faces of those around us. Particularly the younger ones. A few of them even questioned Shiva and Akhay about it. No wonder, they were nervous.

Assam has always been, to me, a mystery, an enigma. Its people warm, spontaneous. Full of hospitality. Genuine. Deep. True. Where else will your host have the courage to lay his feelings bare before you? "Aap nahin ayenge to humko bahut burra lagega". Laughter in their eyes. Music and rythem built into their bodies. Beautiful smiles and innocent openness in their beings. Nature has showered its bounties on Assam.

But beneath the splendour lies a society splintered and wounded.

Contd on Page No 15

Restructuring of Higher Education

Synopsis of resolution passed at 42nd National Conference held at Bangalore :

Higher education is at a very low ebb in our country, at the moment, as compared to that in other parts of the world.

Since the last few years higher education has become available to a lot of people and therefore has imparted a social mobility to many. In the process, however, standards of higher education could not be maintained and what is being churned out is a mass of job and prestige seeking students to whom, examinations are all that is important. There is widespread dissatisfaction among the people as far as the prevalent education pattern is concerned.

Various attempts have been made in the yester years to update the education patern. The new national education policy was formulated in 1986. The Committee of Aacharya Rammurthi submitted its report on the issue of higher education in 1990 on the basis of which a new education policy was formulated. All governments thereafter have failed to implement the suggestions made in the report and given over years by various committees. This National Conference of ABVP, therefore in the context, feels that the scrutiny of higher education in our country, is of utmost importance.

The ABVP deems higher education to be extremely important and feels that shares a crucial relationship with society. Earning a livelihood out of higher education, which should be secondary has become the all important aim while tolerance, humanism, progress and search for truth that Dr. Radhakrishnan once pointed out as the prime aim of educational institutions, have all taken the back seat.

The inter-relations of the Universities with society need to be redefined. It needs to be understood that the stress on the social committments of education is not to belittle individual aspirations. Even today 60% of the students of higher education opt for humanities - some see this as something complementary to social progress while for some it is of little use to progress in all.

This 42nd National Conference of ABVP believes that, the popular notion, that the prime aim of higher education is imparting merely skills, is unfortunate. This notion has brought the feeling of 'utility' or otherwise of syllabuses to the fore. In the first five year plan 60% of the sum was reserved for education which, in the eighth five year plan has fallen to 4.5%. In comparison to the governments of the other parts of the world, our government spend very little on the students of higher education.

The new economic policy, that is a part of the process of liberalisation, has been implemented in the nation. Commercialisation has made itself felt in the educational field too. In the name of liberalisation western culture is being impressed upon students all over the country. The thought that students ought to be trained at the University level according to the demands of the markets of employment is gaining ground. This is totally against what was once deemed as the prime aim of education. There will then be a time when social studies, humanities and languages will no more be delt with at University levels.

The secondary school level ought to be concentrated on to impart skills that would help employment. A lot many students enroll for higher studies because they do not have anything meaningful to do. We need to process a system where in only those students would, enroll into higher education who are actually interested in research and education; the rest would rather take up courses that would help them be self reliant. Students taking such courses should be given all the basic facilities possible.

This 42nd National Conference of ABVP feels that the aims of higher education need to be carefully scrutinised and that plans ought to be made only after a serious and meticulous thought.

The following rules should be observed:

A) Education should be for all and not just for the elite and financially well off.

B) The restructuring of higher education does not merely mean that of technical and professional courses, it also includes humanities and languages for the society's development.

C) By strengthening proffesional education the pressures on higher education can be lessened.

D) The purpose of education should be to lead the society, direct it and help social changes. Education should be freed from political controls, the society ought to have control over it and education ought to be in a way answerable to the society.

This 42nd National Conference of ABVP strongly feels that all those who are a part of the University campuses must come forward to hold a serious and meaningful debate to not just restructure higher education in India but to successfully face all challenges from the quarters of technical progress on the global platform.

Contd from page No. 13

We've been always neglected by New Delhi. The Ganga and the Bramhaputra are two equally gigantic rivers. But despite flowing through a region of grave strategic importance, the former has 16 bridges and the latter only two! Don't we count? For the average Indian tourist the eastern-most railway station is New Jalpaiguri, on the way to Darjeeling. Isn't there Assam, so scenic, so lush? We've no industry no business and the best of our professionally qualified youth sit idle. Or are sucked in by extremist groups like the ULFA or the Bodo Security Force. What does New Delhi gain by playing one community against the other? Like the British did in their time. What are we? A colony of India?

Scratch the surface and such questions will stare you in the face. Hard. Cold. Bitter. But above all, true. Assam is a land haunted by unrest, strife and unemployment. Whether to let these in gulf its beauty is our choice. The only way to save Assam is to reach out to it. With love and openness.

The Human Development Cost of Arms Imports

As we know stepping in to 21st Century every country, trying to achieve self-sufficiency in every field, is in the race of expensive arms imports. But do you know? As every coin has two sides, despite fulfilling the basic needs of the country many countries are running behind these expensive arms.

Many countries continue to import expensive arms, even though they have a long list of more essential items. This is clear from the arms deliveries and orders in the categories covered by the UN's arms register. Some of the choices by developing countries in 1992 :

- **China** - purchased 26 combat aircraft from Russia in a deal whose total cost could have provided safe water for one year to 140 million of the 200 million people now without safe water.
- **India** -ordered 20 MiG-29 fighter aircraft from Russia at a cost that could have provided basic education to all the 15 million girls out of school.
- **Iran** - bought two submarines from Russia at a cost that could have provided essential medicines to the whole country many times over; 13% of Iran's population has no access to health care.
- **Republic of Korea** - ordered 28 missiles from the United State for an amount that could have immunized all the 1,20,000 unimmunized children and provided safe water for three years to the 3.5 million people without safe water.
- **Malaysia** - ordered two warships from the United Kingdom at a cost that could have provided safe water for nearly a quarter century to the five million people without safe water.
- **Nigeria** - purchased 80 battle tanks from the United Kingdom at a cost that could have immunized all of the two million unimmunized children and provided family planning services to nearly 17 million of the more than 20 million couples who lack such services.
- **Pakistan** - ordered 40 Mirage 2000E fighters and three Tripartite aircraft from France at a cost that could have provided safe water for two years for all 55 million people who lack safe water, family planning services for the estimated 20 million couples in need of such services, essential medicines for the nearly 13 million people without access to health care and basic education for the 12 million children out of primary school.

(Source : The Human Development Report, 1994)

Contd. from page No. 4

खोकले साबित हुए है। विद्यार्थी परिषद का यह राष्ट्रीय अधिवेशन देश को एवं जम्मू कश्मीर की जनता से इस विकट परिस्थिती में नौकस रहने का आग्रह करता है और सरकार से यह मांग करता है कि विस्थापितों को घाटी में वापस ले जाने का योग्य प्रबंध करें।

वैसे अल्पमत के इस सरकार के नेतृत्व में देश की सभी समस्याएँ जटिल हुई है। दलित इसाईयों को आरक्षण का लाभ दिलाने की सरकार की घोषणाने इसाई मिशनारियों द्वारा धर्म परिवर्तन के प्रयास को अधिक बल प्रदान किया और अनसूचित जातियों एवं जनजातियों के वर्तमान आरक्षण में कटौती की आशंका पैदा की। विद्यार्थी परिषद का यह राष्ट्रीय अधिवेशन सभी राष्ट्रीय शक्तियों से सरकार के इस कुचक्र को विफल बनाने का आह्वान करता है।

मार्क्सवादी दल देश को अपनी जागीर समझ बैठा है। केरल में इसकी सरकार विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं समेत अपने सभी विरोधियों की हत्या करने में जूटी है। विद्यार्थी परिषद का यह राष्ट्रीय अधिवेशन मार्क्सवादियों की असहिष्णुता को देशभर बेनकाब करने का संकल्प करता है।

विद्यार्थी परिषद का यह राष्ट्रीय अधिवेशन देश की दुरवस्था के लिए सत्ताधीशों को पूर्ण रूप से दोषी मानता है; सामाजिक दण्ड शक्ति के अभाव में भ्रष्टाचार बढ़ा है यह भी मानता है। अत: विद्यार्थी परिषद का यह राष्ट्रीय अधिवेशन देश के समस्त युवा एवं विद्यार्थियों को आह्वान करता है कि वह आज के भ्रष्ट राजनेताओं एवं उनके द्वारा भ्रष्ट कर दिए गए इस तंत्र से निजात पाने के लिये एक निर्णायक जन आन्दोलन आरंभ करें।

R.P.No. MH/BYW-437/95

1996 का युवा पुरस्कार महाराष्ट्र के श्री विश्वनाथ बेंदे को

श्री विश्वनाथ बेंदे को पुरस्कार प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि डा. एच. आर. सुदर्शन

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार अभाविप के ज्येष्ठ कार्यकर्ता एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. यशवंतराव केलकर की स्मृति में पिछले 8 वर्षों से प्रदान किया जा रहा है। इस वर्ष यह पुरस्कार सोलापुर (महाराष्ट्र) के श्री विश्वनाथ बेंदे को 'झुग्गी झोपड़ी निवासियों का विकास' इस विषय के संदर्भ में प्रदान किया गया। इस पुरस्कार में दस हजार रुपया नगद, प्रशस्तिपत्र तथा मानपत्र भेंट किया गया।

बेंगलुर में हुए अभाविप के 42 वे राष्ट्रीय अधिवेशन में यह पुरस्कार समारोह हुआ जिसके मुख्य अतिथि प्रसिद्ध समाजसेवी व मैगसेसे पुरस्कार विजेता डा. एच. आर. सुदर्शन थे। अपने उद्बोधन में डा. सुदर्शन ने कहा कि अच्छी एवं व्यापक शिक्षा ही राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं का एक मात्र समाधान है जिसकी ओर समुचित ध्यान देना आवश्यक है, शिक्षा से ही, हम अच्छे इन्सान बन सकते है।

श्री बेंदेजी 1978 से सोलापुर के सिव्हील अस्पताल के पीछे स्थित झुग्गी झोपड़ी के विकास कार्य में जुटे है। 1978 में इस बस्ती में अ.भा.वि.प. का संस्कार केंद्र चलता था। इस संस्कार केंद्र में बस्ती के छोटे बच्चों को इकट्ठा कर उनको देशभक्तिपर गीत सीखाना, उनकी पढ़ाई लेना, ऐसे काम किये जाते थे। श्री बेंदेजी पर उस समय संस्कार केन्द्र प्रमुख [illegible] थी। इस छोटे प्रकल्प के कारण उनके मन में इस बस्ती के लिए कुछ करने की भावना उत्पन्न हुई। बाद में यह केंद्र बंद हो गया। लेकिन श्री बेंदे व्यक्तिगत रूप से यह काम चलाते रहे।

महात्मा फुले झोपड़ पट्टी में कुल 200 झोपड़ियाँ है। 1981 में [illegible] हेतु इस बस्ती को तोड़ने की कोशिश कुछ लोगोंद्वारा की जा रही थी। महाराष्ट्र शासन के कानून के अनुसार 1980 से पहले बने हुए झोपड़े तोड़ने की अनुमति नहीं है। फिर भी यह कोशिश की गयी। श्री बेंदेजी ने इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठायी और झोपड़े तोड़ने पर रोक लगाई।

बस्ती के विकास हेतु कई योजनाएं बेंदेजीने अपने कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलाई। बस्ती के रास्तों की बुरी हालत सुधारने के लिए उन्होंने अच्छा रास्ता बस्ती के लोगों के साथ बनाया। बस्ती में शुद्ध जल और बिजली लाने हेतु प्रयत्न किये। लोगों को साक्षर बनाने हेतु प्रौढ शिक्षा वर्ग, साक्षरता केंद्र चलाए। युवा लोगों में बढ़ती हुई व्यसनाधीनता को रोक लगाने हेतु उन्होंने व्यसन मुक्ती अभियान चलाया। इसके अंतर्गत उन्होंने युवकों के लिए व्यायाम करने की सुविधा उत्पन्न की। बच्चों में अच्छे संस्कार होने के लिए बालसंस्कार केंद्र शुरू किया। महिलाओं को रोजगार प्राप्त करने हेतु बस्तीमें ही लघु उद्योग करने के लिए उन्होंने महिलाओं को प्रोत्साहित किया।

इस विकास कार्य को और आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने बस्ती के लोगों के लिए अच्छे घर बनाने की योजना बनायी है। उनके योजना के अंतर्गत 5220 चौ. मी. के जगह पर 220 चौ. मी. का हर एक घर होगा। ये घर 120 परिवारोंको दिये जायेंगे। 120 घरों के साथ ही पाठशाला, पुस्तकालय, व्यायाम की सुविधा, महिलाओं के लिए लघुउद्योग केन्द्र आदि चलाये जायेंगे। उन्होंने सरकार से ऋण पाने के लिए प्रयत्न किए, जिसके फल स्वरूप ऋण की रकम उन्हें मिल सकी।

आज इस बस्ती के ही युवक श्री बेंदेजी का हाथ बटा रहे है। वे अब साक्षरता केंद्र चलाते है। रक्तदान शिबीर आयोजित करते है। बस्ती के लोगों में समाज के लिए कुछ करने की भावना उत्पन्न हुई है।

प्रामाणिक और अथक प्रयत्नों से एक व्यक्ति बहुत बड़ा काम कर सकती है यह साफ श्री बेंदेजी के कार्य से प्रतीत होता है।

उन्हें उनके भविष्य के कार्य के लिए हार्दिक शुभेच्छाएँ।

Printed & Published by: Prof. Shekhar Chandratre, Editor, Chhatrashakti, 3 Marble Arch, S.B.Marg, Mahim, Mumbai-400016
Printed at : Shirang Printers Pvt. Ltd. Wadala, Mumbai- 400 031